भगवत कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 11	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
मंगलवार 26/11/96	नवम्बर-1996	प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मप्रवाह

अक्षरधाम की चाबी और सम्पूर्ण सफलता

जीवन दौरान हर एक व्यक्ति कोई न कोई प्रवृत्ति में, कार्य में, आदेश में सफलता चाहता है और कार्य की कृतकृत्यता में से—पूर्णता में से आनंद, सुख, शांति व मानव विकास एवं प्रगति के सर्जनात्मक बल गतिमान करने की इच्छा को—आकांक्षा को—वृत्ति को पोसता है। सफलता व सिद्धि के कई प्रकार हैं। तीन गुण, तीन अवस्थाओं और माया की टोली के इक्यावन स्थानकों से जीवात्मा विविध प्रकार की साधना करके सफलता और सिद्धि का साक्षात्कार करता है। स्थान, भूमिका, तीव्रता, झंखना, श्रद्धा और विश्वास के साथ के परिश्रम या पुरुषार्थ के मुताबिक ही उसका आनंद और सुख प्राप्त होता है। फिर भी स्वभाव और वासना, प्रकृति और संकल्प विराम, जीते जी जीत नहीं पाते और तब तक सनातन सुख, परमशांति, अलौकिक दृष्टि और आत्मा साक्षात्कार का अनुभव करके जीव मुक्तदशा में पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान का सुख, आनंद, सामर्थ्य व मूर्ति का अनुपम अपरिमित चैतन्य रस गुणातीत स्थिति में रहकर झेल ही नहीं सकता और अनुभव में भी नहीं आता; तो अखंड प्राप्ति तो हो ही कहां से? कारण शरीर और इससे भी महादुष्कर महाकारण की तूर्यावस्था, जो देवों को भी विक्षेप देती है और अवतारों को भी आवरणरूप बनती है, उसे जीतने के साथ-साथ सच्चा सत्संग करके आत्मा के साक्षात्कार की सम्पूर्ण सफलता का अनुभव करके, ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म पुरुषोत्तम की सेवा में दासभाव से अखंड आनंद, परमसुख और शांति प्राप्त करके जब तक मुक्तपन की कृतकृत्यता पाते नहीं, तब तक सफलता की, प्रकाश की, दर्शन की, ज्ञान की, भक्ति की, सेवा की, बड़प्पन की जो-जो स्थिति भले ही हो चुकी हो, पर खतरे खड़े ही हैं। सगुण-निर्गुणपन के भेद से भी परे निरपेक्ष निष्काम भावना से भरपूर निष्कपटभाव से वर्तकर महाराज के चरणों में निमग्न रहकर, सत्संग, सेवा, भक्ति-निर्भयता से, निडरता से और परिपूर्णता की प्रतीतिसह की भावना से मुक्तपन की सम्पूर्ण सफलता का अनुभव नहीं होता और भोगा भी नहीं जाता। इस हेतु1 अपने आपको अक्षररूप मानकर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के साधर्म्य को पाकर, मनन द्वारा संग करके, महाराज की सेवाभक्ति दासभाव से करने की अक्षरधाम की चाबी केवल महाराज, स्वामिजी या उनके साधर्म्यपन को पाए हुए-जीतेजी एकांतिकभाव को पाए हुए-कोई परम भागवत संत द्वारा ही पा सकते हैं; प्राप्त कर सकते हैं। करोड़ों जन्म की कसर टलती है। धाम की चाबी हाथ में आने के बाद, धाम की विभूति, मूर्ति के सामर्थ्य, सत्ता, गुण, ऐश्वर्य, सुख सर्वोपरि तरीके से गुणातीत स्थिति में अपार अमृत के सागर में-चिदाकाश की राशि में अखंडित अविरतरूप से पा सकें-ऐसा सत्संग करते-करते संत के चरणों में रहना-यही जीवन का सच्चा पुरुषार्थ है। वही ध्येय है। साधना से परमपद का सर्वोत्कृष्ट मुक्तपन की स्थिति और सम्पूर्ण सफलता है। फिर प्राप्त करना, अनुभव करना, भोगना या प्राप्त करना रहता ही नहीं। इस लोक की और परलोक की ऐसी प्राप्ति संत द्वारा ही संभव है। ग.प्र. 54, मध्य 54, व. 5-11, मध्य 30, 45, 62 विचारना।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का पुरुषार्थ अविरतरूप से अनादि काल से चलता रहता है। आत्यंतिक मुक्ति केवल श्रीजी ने ही आसान बनाई है। उसके लिए ही यह जीवन है और प.पू. योगीजी महाराज तथा पू. मोटास्वामी, पू. अक्षर पुरुषोत्तमस्वामी जैसे परमभागवत संतों और महाराज के ही साक्षात् स्वरूपों द्वारा लोया 12 के मुताबिक अति उत्तम

निर्विकल्प निश्चय सिद्ध करके गुणातीत स्थिति प्राप्त करनी है और तब जीतेजी अक्षरधाम की चाबी लगाकर, महाराज की मूर्ति का परमसुख, आनंद मध्य 66, अहमदाबाद 6-7 के मुताबिक आता है। 29-28 के मुताबिक अनुभव करके अखंड उसे प्राप्त करके रखना है। उसके लिए इस लोक में प्रयास करते हैं, वैसे बुद्धिमान पुरुष को-मुमुक्षु को अक्षरधाम की चाबी प्राप्त करने का प्रयास करना है।

एकलब्य भील का लड़का था। चूंकि द्रोणाचार्य ने अर्जुन को वचन दिया था कि समर्थ बाण चलाने वाला दूसरा कोई नहीं बने, सो वैसी धनुर्विद्या सीखाने उसके प्रति अरुचि बताई। फिर भी एकलव्य ने माँ का आशीष लेकर, केवल गुरु की मूर्तिरूपी उपासना, आज्ञा और भक्ति से विद्या प्राप्त कर ली और गुरु को भी शरमा दिया। बली राजा ने भी सर्वस्व का समर्पण भगवान के लिए ही किया तो भगवान साक्षात् वश हो गए और सम्पूर्ण सफलता, प्राप्ति, आदर्श की ध्येय सिद्धि-साधना का अंत और कृतकृत्यता का अनुभव किया, जो शास्त्रों ने मुक्त कंठ से गाया है। सफलता की चाबी-यदि एकलव्य की सिद्धि गिनो तो वह अपरिमित श्रद्धा, अस्खलित परिश्रम और अखंड तमन्ना-तीव्रता-सर्वोपरि उपासना में समाई हुई है। ऐसे प्रयत्न के लिए, परमभागवत साक्षात् गुरुहरिश्री हमें मिले हैं। अक्षरधाम की चाबी या सर्व वचनामृतों का सार-रहस्य एक ही लाईन में आ जाता है कि–**'यथार्थ स्वरूपनिष्ठा समझ कर आज्ञा पालो।'** यूं जितनी आज्ञा गुरुचरणों में रहकर पालेंगे और निष्कपटरूप से लोया 5 के मुताबिक महाराज का और प्रगट प्रत्यक्ष संत पू. योगीजी महाराज तथा संतों का स्वरूप निर्दोष समझ कर, उनकी मर्जी मुताबिक सम्पूर्ण विश्वास से वो जो कहें वह आनंदपूर्वक करते रहेंगे, उतनी साधना की सिद्धि, परमपद की प्राप्ति और स्वामिजी का सुख प्राप्त होगा ही। यह है अक्षरधाम की चाबी– गुरुमुखी बने बिना–धाम के दरवाजे पर महामाया तथा महाकारणरूपी तूर्यावस्था-अपनी जाल में फंसाकर लूट लेने-स्थिति में से गिरा देने तत्पर ही रहती है। सो, मनमुखी न बनकर साक्षात्कार की स्थिति को पाए सत्पुरुष द्वारा ही सम्पूर्ण सफलता हर एक सत्संगी देह रहते ही अनुभव करे, भोगे और प्राप्त करे। प.पू. शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची उपासना मूर्तिमान बनाकर आत्यंतिक मुक्ति का मार्ग सभी के लिए अतिशय सरल बना दिया है। गुणातीत ज्ञान सबीज है। उसकी अनादि चिदाकाश की साकार मूर्ति जो प्रत्यक्ष है, उसमें, 'मैं' और 'मेरा' भूल कर, खोकर, शरण लेकर, चाबी लगाकर, स्वधर्मयुक्त वर्तकर, अखंड दिव्यता ही समग्र सत्संग में दृढ़ करनी–वही हम सब के जीवन का आदर्श, ध्येय और साधना गिननी चाहिए। गुरुहरि हम पर कृपादृष्टि रखकर परमपद का अधिकारी बनाएं–यही अभ्यर्थना।

फूल की खुशबू हवा की लहरों के साथ मिलकर-प्राणीमात्र को मुग्ध कर स्वयं का अनुभव कराती है, वैसे ही गुणातीत बाग के संत चरणों में ही पले हुए और साधना को पाए हुए, हमारे सत्संग के महाकुसुमों उसके जीवन की कृतकृत्यता, आत्मा परमात्मा का साक्षात्कार करके, जीतेजी जीवन मुक्तदशा प्राप्त करके, अनंत जीवों के लिए कल्याण का, मंगल का, विकास का, पूरिपूर्ण सफलता का मार्ग ऐसा ही निष्कंटक रखें और सरल सादा जीवन जीकर, दासभाव से ही सर्वोपरि उपासना दृढ़ करके, सेवा और भक्तिरूप से उसकी खुशबू का परमानंद सभी के लिए दृष्टिगोचर बनाए यही स्वामिजी को नम्र प्रार्थना है।

– प.पू. काकाजी महाराज
अप्रैल, 1953

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

537. त्रिकमदासजी कोठारी ने कहा कि पर्दा नहीं रखना, आपके स्वरूप की पहचान करवाना। तब बोले कि पहचान दी है, पर्दा नहीं रखते। आग का शोला देखना है क्या? लेकिन प्रकाश के गोले में कोई माल नहीं, ऐसे ही ठीक है।

प्र-5, 377

538. सोया रहता हो लेकिन भारी भगवदी हो। वह हम पहचान नहीं पायेंगे। उस पर गांव भादरा के डोसाभाई की बात करी कि–वे मंदिर में आकर सोये रहते और दूसरे आधी रात तक जगते। तो भी उनके बराबर नहीं हो सकते।

प्र-5, 378

539. हमें महाराज ने कहा कि गांव में से आए? तब कहा कि नहीं महाराज नदी की ओर से आए। यूं परिस्थिति देखकर बोलने से महाराज प्रसन्न हुए और मुक्तानंदस्वामी के पूछने पर 'कथा अच्छी है' यूं कहा; तब महाराज ने कहा कि कल भी इसे लेते आना। यूं माहौल देखकर-सोच समझ कर बोलना।

प्र-5, 381

540. यह जीव देह का गुलाम है। वह देह की सेवा करता है और भगवान के पास भी देह की रक्षा करवाता है तथा भगवान को देह की सेवा में रखता है। देखो, प्रह्लाद ने देह की रक्षा को रक्षा नहीं मानी और नहीं मांगी।

प्र-5, 384

541. लगातार इस देह में और इस लोक में सुख बरते तो यह जीव कब उदास हो—ऐसा है? सो किसी प्रकार का कठिन माहौल बने, वह भी ठीक है।

प्र-5, 385

542. भादों शुक्ल प्रतिपदा के दिन संध्या आरती होने के बाद संतों के नाम का प्रकरण चला। उसमें बड़े-बड़े भी एक-एक नाम के दो, चार, पांच तो थे ही। वे स्वयं कहते जाए और दूसरे पूछते जाएं। उसमें गुणातीतानंद नाम तो एक ही। फिर कथा में संत के नाम आये, तब किसी ने पूछा कि आपके नाम का कोई दूसरा था? तब स्वयं बोले कि वह तो एक ही; बाकी दूसरे सभी नाम के साधु और संन्यासी बहुत। फिर संग करने का पूछा, उसमें प्रथम जागाभक्त का कहा फिर दूसरों के नाम लिए।

प्र-5, 387

543. एक दिन स्वामी महापूजा में बैठे वहां अंतरवृत्ति करके समाधि में उतर गए व दो-तीन दिन तक उठे नहीं और फिर स्वयं उठकर पालथी बांधकर बैठे। फिर सभी को पता चला कि स्वामी समाधि में से जाग गए। तुरन्त मन्दिर के सभी जनों की सभा इकट्ठी हो गई और सब स्वामी के सामने एक टक देखते रह गए। तब स्वामी बोले कि अभी जैसे देख रहे हो, ऐसे ही यदि वृत्ति रहे, तो कर्मग्रंथि, संशयग्रंथि, ममत्वग्रंथि, इच्छाग्रंथि, अहंग्रंथि वगैरह सभी ग्रंथियाँ पिघल जाएं।

प्र-5,388

544. एक बार महाराज अक्षर ओरडी में विराजमान थे। वहां मैं महाराज के दर्शन के लिए गया। तब शुकस्वामी मेरे लिए आसन ढूंढने लगे। तब महाराज ने कहा उनका बड़प्पन आसन से नहीं है। ये तो अनादि के बड़े हैं और दूसरों का तो आसन से छोटापन बड़प्पन है। यूं यह साधु को नहीं, ऐसा कहा।

प्र-5,389

545. कई कहते हैं कि व्यवहार की बात में स्वामी समझते नहीं और मैं भी ऐसा मानने वालों को यही कहता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। परन्तु व्यवहार तो स्वामी ने चलाया, ऐसा किसी को भी आया नहीं।

प्र-5,390

546. भगवान की तरह बड़े साधु भी जानते हैं और ये तो भगवान जैसे हैं, ये सारी बातें जानते हैं। सो उनके प्रति मनुष्यभाव छोड़कर प्रार्थना करनी, क्योंकि वे तो सर्वज्ञ हैं।

प्र-5,391

✡✡✡✡✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ

अन्नकूटोत्सव

अन्नकूटोत्सव यानि-भावपूर्ण हृदय से प्रभु को प्रेम से थाल के रूप में भाव व्यक्त करने का दिन ! हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अनिर्देश-मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट-वार्षिक महाभोग लगाया गया....

11 नवम्बर सुबह 10.00 बजे नए वर्ष के प्रारम्भ निमित्त एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें प.पू. गुरुजी ने वच. ग. अत्यं 36 को समझाते हुए बात करी-**'नए साल का दिन.... हमारा सारा साल अच्छा जाए... हर एक दिन अच्छे ही जाएं.... सारे मनोरथ सिद्ध हों-उसका यह वचनामृत है। भगवान की मूर्ति की उपासना व ध्यान के बिना आत्मदर्शन हो ही नहीं सकता.... चाहे हम कितने भी साधन करें-प्रयत्न करें.....'**

फिर वच. अत्यं. 2 समझाते हुए प.पू. गुरुजी बोले—**'.... यह रहस्य का वचनामृत है.. सब कुछ नष्ट होने ही वाला है, हम समझते भी हैं। फिर भी जगत का आकर्षण-मोह हम छोड़ नहीं पाते। पर, आज कई example मिलेंगे जिनका जगत टल गया.... ब्रह्मस्वरुप संत के साथ यदि संबंध होगा तो हमें हर्ष-शोक जगत के परेशान नहीं करेंगे.... भगवान, संत और सत्संगी ही सत्य हैं बाकी सब मिथ्या है। स्वामिनारायण-स्वामिनारायण अखंड भजन करने जैसा, बाकी सब अपने आप होता रहेगा... जीवन के हृदय में वैराग्य नहीं, भगवान के प्रति प्रीति नहीं। असली वैराग्य कुछ और चीज़ है। प्रभु में राग हो जाए तो वैराग्य अपने आप हो जाएगा.... गोपियाँ कृष्ण में डूब गई तो जगत अपने आप छूट गया... कोई समझदारी से, कोई विश्वास से अपने-अपने अंग के मुताबिक जुड़ जाएगा। दूसरों का देखकर अपना ढांचा बदलने की कोशिश नहीं करना... तुम्हारा प्रेम ढांचा हो तो प्रेम से ही आगे जाना, ज्ञान में मत पड़ना—परेशान हो जाओगे। तुम्हारा सेवा का अंग हो तो सेवा में लगकर सब भूला जाएगा। अपना ढाँचा समझकर रखना चाहिए तो भगवान में आसनी से जुड़ पायेंगे.....**

.... सत्संग यानि सत्पुरुष-काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे पुरुष जिन्होंने अखंड भगवान रखे हैं... मैगनेट के बीच अगर

पतला-सा भी पेपर होगा तो दूसरा लोहा मैगनेट नहीं बन पाता। सो सत्पुरुष के गुण आते नहीं.. जैसी महिमा है वैसी हम समझ नहीं पाते... स्वरूप को देखने निगाह पलटनी पड़ती है... साधु से संबंध करना पड़ता है... बड़े पुरुष जो भी कहते हैं वो परम सत्य ही है। बड़े पुरुष की बात समझ में नहीं आती, पर काकाजी आप जो कुछ भी कह रहे हो वो परम सत्य ही है, यह प्रार्थना तो करनी पड़ती है—मैं गल्त, तू सही-यह accept करना पड़ता है। भगवान व संत दिव्य, तो-उसके संबंध वाले सभी दिव्य हैं.. ऐसे ब्रह्मभाव को पाएं संत का संबंध ही सब कुछ करा पाएगा.....'

इस प्रकार प.पू. गुरुजी ने आध्यात्मिक भोजन से सभी को तृप्त करके नए वर्ष का प्रारंभ करवाया... सभा के बाद सभी ठाकुरजी की आरती के लिए गए.. सभी सेवकों ने खूब परिश्रम करके अन्नकूट का खूब आकर्षक सुशोभन किया हुआ था.... हमेशा की तरह हरिभक्त भावपूर्ण हृदय से अलग-अलग व्यंजन बना कर लाए थे जो कि ठाकुरजी के समक्ष भोग के लिए रखे थे... पू. राकेशभाई, पू. ऋषिभाई ने ठाकुरजी का थाल गाकर आवाहन किया... प.पू. गुरुजी, पू. भाईस्वामिजी, प.भ. मल्कानी साहब व अन्य हरिभक्तों ने सब की ओर से ठाकुरजी की आरती करी.....ठाकुरजी ने खूब अच्छी तरह भावना ग्रहण करी हो, ऐसा सभी ने अनुभव किया...आरती के बाद सभी ने महाभोग का प्रसाद लिया-आनंदपूर्वक सारा दिन व्यतीत किया....

गुणातीत जैसी है छवि इनकी.....

(राग – धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना...)

गुणातीत जैसी है छवि इनकी
मानस पुत्र काकाजी के
अल्प संबंधी में भी करते हैं
दर्शन ये काकाजी के
गुणातीत जैसी है...

वचन पे काकाजी के, दिल्ली में चले आए
बाधाओं-विपदाओं से, डिगे नहीं कभी;
बनवा कर ताड़देव, काकाजी का दिव्य स्वप्न
आपने साकार किया है, यहाँ अभी
धन्य है आपकी गुरुभक्ति
सेवक हो सच्चे काकाजी के
गुणातीत जैसी...

जिसका भाव जैसा है, वैसे रूप में ही आप
बने पथ प्रदर्शक, हर जीव के लिए
भक्तों में रसबस होकर, उनके दुःख स्वयं लेते
सहने को तैयार कुछ भी, मुक्तों के लिए
ऐसे गुरुजी हमको भेंट दिए
ऋणी हम सब हैं काकाजी के
गुणातीत जैसी...

हँसते-खेलते हुए ही, अपना बना लेते हैं
अंतर में भर दें, आनंद ही आनंद
प्रकृति प्रारब्ध को तो, सहज टाल देते हैं
रख देते मन में मूर्ति प्रभु की सुखकंद
सामर्थ्य अपना छुपाकर रखते,
निर्मानी शिष्य काकाजी के
गुणातीत जैसी...

आपकी रुचि में रहें, ये बात करते हैं लेकिन
भागते रहते हम मन की दिशाओं में
मायिक दृष्टि से हम, माहात्म्य ना समझ पाएं
हित न देखें, आपकी सारी क्रियाओं में
पहचानें आपको, ये दिलवाओ
आशीर्वाद काकाजी के
गुणातीत जैसी... ओ लाइले ये काकाजी...

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	6.12.96	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत
2. दि.	16.12.96	सोमवार	–	धनुर्मास, प्रारम्भ
3. दि.	20.12.96	शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053